ISSN - 2231 - 5837
RNI - UPBIL / 2011 / 38102

Journal Impact Factor No. : 5.114

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Volume - 9 : Issue - 37 July-Sept. 2020 Gaziabad

IJSC

37

Research Journal is indexed in the International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database

Chief Editor
Dr. Hari Sharan Verma

Editor
Dr. Rajnarayan Shukla

Managing Editor
Dr. Satish Ahuja

Managing Editor
Dr. Sangeeta V erma

(A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES)

RNI-UPBIL/2011/38102

ISSN-2231-5837

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

(मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

Volume - 9 : Issue - 37 July-Sept. 2020 Gaziabad

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Journal Impact Factor No. : 5.114

Editor
Dr. RAJ NARAYAN SHUKLA

Asstt. Editor
MUKTA SONI

Art Editor
Dr. (MS) PANKAJ SHARMA

Legal Advisor
Dr. JASWANT SAINI
SHRI BHAGWAN VERMA

Office Assistant
JITENDER GIRDHAR

Chief Editor
Dr. HARI SHARAN VERMA

Sub Editor
Dr. PUSHPA
Dr. BEENA PANDEY (SHUKLA)

Managing Editor
Dr. SATISH AHUJA
Dr. SANGEETA VERMA

Joint Editor
Dr. PRIYANKA SINGH

Computer Operator
MS. NEHA VERMA

Dr. Hari Sharan Verma
Chief Editor

Dr. Raj Narayan Shukla
Editor

Dr. Satish Ahuja
Managing Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

P The responsibility of the originality of the articles/papers shall be of the author.

P The editor does not owe any kind of responsibility in this regard.

मानविकी शोध पीठ प्रारम्भ सोसायटी,
गाज़ियाबाद द्वारा संचालित

RNI-UPBIL/2011/38102

ISSN-2231-5837

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

(मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

Volume-9 : Issue-37 July-Sept. 2020 Gaziabad

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Journal Impact Factor No. : 5.114

Editor
Dr. RAJ NARAYAN SHUKLA

Asstt. Editor
MUKTA SONI

Art Editor
Dr. (MS) PANKAJ SHARMA

Legal Advisor
Dr. JASWANT SAINI
SHRI BHAGWAN VERMA

Office Assistant
JITENDER GIRDHAR

Chief Editor
Dr. HARI SHARAN VERMA

Sub Editor
Dr. PUSHPA
Dr. BEENA PANDEY (SHUKLA)

Managing Editor
Dr. SATISH AHUJA
Dr. SANGEETA VERMA

Joint Editor
Dr. PRIYANKA SINGH

Computer Operator
MS. NEHA VERMA

Dr. Hari Sharan Verma
Chief Editor

Dr. Raj Narayan Shukla
Editor

Dr. Satish Ahuja
Managing Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

☆ The responsibility of the originality of the articles/papers shall be of the author.

☆ The editor does not owe any kind of responsibility in this regard.

मानविकी शोध पीठ प्रारम्भ सोसायटी,
गाज़ियाबाद द्वारा संचालित

Created by Universal Document Converter

प्रकाशक : डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
दूरभाष : 9910777969
E-mail : harisharanverma1@gmail.com
WWW.IJSCJOURNAL.COM

सहयोग राशि (भारत में)
(व्यक्तिगत) (आजीवन 4100 रुपये)
(संस्थागत) (आजीवन 6100 रुपये)

विदेश में :–
(व्यक्तिगत) 26 यू.एस. डॉलर (आजीवन) (संस्थागत) 32 यू.एस. डॉलर (आजीवन)

कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें।
बैंक ड्राफ्ट, संपादक "इण्डियन जर्नल ऑफ सोशन कन्सर्न्स" के पक्ष में देय होगा। आजीवन सदस्यता केवल दस वर्षों के लिए मान्य होगी। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है तो आजीवन सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संपादकीय कार्यालय :

1. **डॉ० हरिशरण वर्मा, प्रधान सम्पादक**
F-120, सेक्टर–10, DLF, फरीदाबाद (हरियाणा)
harisharanverma1@gmail.com 09355676460
WWW.IJSCJOURNAL.COM
2. **डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक**
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

क्षेत्रीय कार्यालय

1. डॉ० वाई.आर. शर्मा, A-24, रेजिडेंसल कैम्पस, न्यू कैम्पस, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180001, फोन : 09419145967
2. डॉ० पी.के. शर्मा, (ई–36 बलवन्त नगर विश्वविद्यालय मार्ग, गवालियर, मध्यप्रदेश फोन : 09039131915
3. डॉ० राजकुमारी सिंह (प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपुत मुरादाबाद उत्तर प्रदेश। फोन : 09760187147
4. श्री मोहनलाल, 11 अशोक विहार, संजय नगर, पो. इज्जत नगर बरेली (उ०प्र०) फोन : 09456045552
5. श्री जितेन्द्र गिरधर, कार्यालय सहायक 105/26 जवाहर नगर,कॉपरेटिव बैंक के पीछे, रोहतक 09896126686
6. डॉ0 विमला देवी, सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लोहाघाट चंपावत (उत्तराखण्ड)–262524 – 9411900411

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ० राजनारायण शुक्ला द्वारा आदर्श प्रिंट हाऊस, बी–३२, महेन्द्रा एन्क्लेव, शास्त्री नगर, गाज़ियाबाद में मुद्रित कराकर, SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ० राजनारायण शुक्ला। **पंजीकरण संख्या :** ISSN-2231 - 5837

संरक्षक मण्डल :

1. **डॉ० रामसजन पाण्डेय** (कुलपति, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा)
2. **डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा ''अरूण''** (पूर्व प्राचार्य, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, ७४/३, नया नेहरूनगर, रूड़की, उत्तराखण्ड)
3. **डॉ० राजेन्द्र सिंह,** (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजि अध्ययन विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय राहतक
3. **डॉ० एस.पी. वत्स,** (पूर्व कुलसचिव, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक)
4. **डॉ० रमेशचन्द लयानिया,** (पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, श्री दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद
5. **डॉ० वाई.आर.शर्मा,** (राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू)

परामर्शदात्री समिति :

1. **डॉ० नरेश मिश्रा** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
2. **डॉ० सुधेश** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)
3. **डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर)
4. **डॉ० राजकुमारी सिंह,** प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
5. **डॉ० प्रतिभा त्यागी,** (प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
6. **डॉ० जंगबहादुर पाण्डेय,** (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग रांची विश्वविद्यालय, रांची–**834008**
फोन :09431595318
7. **डॉ० माया मलिक,** (प्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
8. **डॉ० ममता सिहल,** (एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा अंग्रेजी विभाग) जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर

संपादकीय विशेषज्ञ समिति :
हिन्दी विभाग:

1. **डॉ० राजेश पाण्डे** (डी.वी. कॉलेज, उरई, जिला जालौन, उ०प्र०
2. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ० सुशील कुमार शर्मा** (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग, मेघालय)
4. **डॉ० शशि मंगला,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
5. **डॉ० के०डी० शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
6. **डॉ० उत्तरा गुप्ता** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, आर एन. कॉलेज, मेरठ)
7. **मुकेश चन्द्र गुप्ता** (हिन्दी विभाग, एम.एच.पी.जी. कॉलेज मुरादाबाद)
8. **डॉ० गीता पाण्डेय** (रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस

कॉलेज, गाजियाबाद)

9. **डॉ० प्रवीण कुमार वर्मा** (सह प्रोफेसर) हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलपल
10. **कु० महाविद्या उपाध्याय** (हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, आरोना (गुना) म०प्र०)
11. **डॉ० रूबी,** प्रोफेसर हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर (कश्मीर) 09419058585
12. **डॉ. सुरेश कुमार** (सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी.एल.जे. एस. कॉलेज, तोशाम, भिवानी)
13. **डॉ० उर्मिला अग्रवाल,** पूर्व प्राचार्या, नेशनल इस्माईल महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ
14. **डॉ० शशिबाला अग्रवाल** (रीडर, हिन्दी विभाग, कनोहर लाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ)
15. **डॉ० अनिल कुमार विश्वकर्मा** (जनता महाविद्यालय अजीतमल, औरेया, उ०प्र०)
16. **डॉ० एम. के. कलशेट्टी,** हिन्दी विभाग, श्री माधवराव पाटिल महाविद्यालय, मुरूम तह० अमरगा, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)–413605
17. **डॉ० मनोज पंड्या,** व्याख्याता हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु, राजस्थान महाविद्यालय, बांसवाड़ा–327001, मो० 09414308404
18. **डॉ. कृष्णा जून,** प्रो० हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
19. **डॉ. विपिन गुप्ता,** सहायक प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज भिवानी
20. **डॉ० सीता लक्ष्मी,** पूर्व प्रो० एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आन्ध्रप्रदेश
21. **डॉ० जाहिदा जबीन,** प्रो० , हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–६)
22. **डॉ० टी०डी० दिनकर,** (एसो० प्रो० एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़)
23. **डॉ० शीला गहलौत,** प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
24. **डॉ0 प्रवेश कुमारी,** सहायक प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक–124001
25. **डॉ0 अनीता,** सहायक प्रोफेसर, श्री आरविन्दो सांध्य महाविद्यालय मालविय नगर, दिल्ली–8595718895
26. **डॉ० उर्विजा शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग शम्भु दयाल स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजियाबाद
27. **डॉ० कामना कौशिक,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग एम.के. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सिरसा 09896796006
28. **डॉ० मधुकान्त,** (वरिष्ठ साहित्यकार) 211- L मॉडल टाऊन, रोहतक

अंग्रेजी विभाग:

1. **डॉ. ममता सिहल, अध्यक्षा,** अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन कॉलिज, सहारनपुर, उ.प्र.
2. **डॉ. रणदीप राणा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ. जयबीर सिंह हुड्डा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
4. **डॉ० रविन्द्र कुमार,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
5. **डॉ. अनिल वर्मा** (पूर्व रीडर, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर)
6. **डॉ. जे.के. शर्मा,** प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक–124001
7. **डॉ. रेशमा सिंह,** (एसो. प्रोफेसर, अंग्रेजी–विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
8. **डॉ. पी.के. शर्मा,** (प्रो., अंग्रेजी–विभाग, राजकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर)
9. **डॉ. गीता रानी शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर) गो.ग.दत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल
10. **डॉ. किरण शर्मा,** (एसोसिएट प्रोफेसर) राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय रोहतक

वाणिज्य विभाग:

1. **डॉ० नवीन कुमार गर्ग** (वाणिज्य विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० ए.के. जैन,** पूर्व रीडर (वाण्ज्य विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
3. **डॉ० दिनेश जून,** एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फरीदाबाद
4. **डॉ० एम.एल. गुप्ता,** (पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य एवं व्यवसायिक प्रशासन संकाय, एस.एस.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़ एवं संयोजक–शोध उपाधि समिति एवं संयोजक बोर्ड ऑफ स्टीडिज चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
5. **डॉ० वजीर सिंह नेहरा,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
6. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
7. **डॉ. गीता गुप्ता,** (सहायक प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक)
7. **डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह,** (एसोसिएट प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, उ.प्र.)

राजनीति शास्त्र विभाग:

1. **साकेत सिसोदिया,** (राजनीति शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
2. **डॉ० रोचना मित्तल** (रीडर एवं अध्यक्षा, राजनीति शास्त्र–विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
3. **डॉ० राजेन्द्र शर्मा** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
4. **डॉ० कौशल गुप्ता,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **Mob.: 09810938437**
5. **डॉ०पी.के. वार्ष्णेय,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनुपुर
6. **डॉ० सुदीप कुमार,** सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र) **Mob.: 9416293686**
7. **डॉ० वाई०आर० शर्मा,** एसो० प्रो०, राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू

Created by Universal Document Converter

विश्वविद्यालय, जम्मू (कश्मीर)

8. **डॉ. रेनू राणा,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, पं. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक 124001
9. **डॉ. ममता देवी,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक शास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

इतिहास विभाग:

1. **डॉ० भूकन सिंह** (प्रवक्ता, इतिहास विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० मनीष सिन्हा,** पी.जी. विभाग, इतिहास, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार–824231
3. **डॉ० राजीव जून,** सहायक प्रो० इतिहास, सी.आर इन्स्टीट्यूट ऑफ ला, रोहतक
4. **डॉ० मीनाक्षी** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग) सी.आर. किसान कॉलेज, जीन्द
5. **डॉ० जगवीर सिंह गुलिया,** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय मकड़ौली कलां रोहतक
6. **डॉ0 विमला देवी,** सहायक प्रोफेसर, स्वामी विवेकानन्द

भूगोल विभाग: स्नातकोन्टर, महाविद्यालय, लोहा घाट, चंपावत

1. **डॉ० पी.के शर्मा,** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर
2. **रश्मि गोयल** (भूगोल विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
3. **डॉ० भूपेन्द्र सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय पी.जी. कॉलेज, हिसार
4. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक

शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० उमेन्द्र मलिक,** एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
2. **डॉ० सरिता दहिया** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
3. **डॉ० संदीप कुमार,** सहायक प्रो० शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
4. **डॉ० तपन कुमार बसन्तिया,** एसोसिएट प्रोफेस, सैंटर फॉर एजुकेशन, सैट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ विहार, गया कैम्या, विनोभा नगर, वार्ड नं. **29, Behind ANMCH** मगध कालोनी, गया–**823001**बिहार**Mob.: 09435724964**
5. **डॉ० नीलम रानी,** प्राचार्या, गोल्ड फील्ड कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बल्लभगढ़ (फरीदाबाद)
6. **डॉ0 राजेश मोहन शर्मा,** प्रिंसीपल एम.एम. इण्टर कॉलेज, ईसपुर, (शामली) उ0 प्र0.
7. **डॉ० सुनीता बडेला,** एसो० प्रो०, शिक्षा विभाग, हेमवतीनंदन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल–२४६१७४
8. **डॉ० (प्रो०) अनामिका शर्मा,** प्राचार्या, एम.आर. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद
9. **डॉ० मनोज रानी,** सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) एम.एल.आर.एस. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, चरखी दादरी (भिवानी)
10.
11. **डॉ० ममता देवी,** (सहा. प्रो. बी.आई.एम.टी. कॉलेज कमालपु गढ़ रोड़, मेरठ)

शारीरिक शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद गर्ग,** एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्ष विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० सरिता चौधरी,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला कैंट, हरियाणा
3. **डॉ० वरुण मलिक,** सहायक प्रोफेसर, म.द.वि., रोहतक
4. **डॉ० सुनील डबास,** (पद्मश्री व द्रोणाचार्य अवार्ड) HOD physical education"DGC Gurugram
5. **डॉ० हरेन्द्र सांगवान,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल

समाज शास्त्र विभाग:

1. **प्रवीण कुमार** (समाजशास्त्र विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्त महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० कमलेश भारद्वाज** पूर्व समाज शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज गाजियाबाद
3. **डॉ० (श्रीमती) रश्मि त्रिवेदी,** पूर्व अध्यक्षा, रानी भाग्यवती महिल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर एवं संयोजक रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

मनोविज्ञान विभाग:

1. **डॉ० चन्द्रशेखर,** सहायक प्रोफेसर साईक्लोजी विभाग, ज विश्वविद्यालय, जम्मू
2. **डॉ. रश्मि रावत,** (मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, देहरादू
3. **अनिल कुमार लाल** (प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, शम्भुदया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)

अर्थशास्त्र विभाग:

1. **डॉ० जसवीर सिंह** (पूर्व रीडर अर्थशास्त्र विभाग, किस स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मवाना)
2. **डॉ० रेणु सिंह राना** (रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, गिन्नी देवी म कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोदीनगर)
3. **डॉ० सुशील कुमार** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
4. **डॉ० अखिलेश मिश्रा** (प्राध्यापक, अर्थशास्त्र–विभाग, एस.डी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद)
5. **डॉ० सत्यवीर सिंह सैनी,** एसो०प्रो० (अर्थ०वि०, गो०ग० सनातन पी०जी० कॉलेज, पलवल)
6. **डॉ० सारिका चौधरी,** अध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, दयाल सिंह कॉल करनाल

विधि विभाग:

1. **डॉ० नरेश कुमार,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दया विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० विमल जोशी,** पूर्व(प्रोफेसर, विधि–विभाग भगत फूल महिला विश्वविद्यालय खानपुर, सोनीपत)

Digitized by Universal Document Cell

3. **डॉ० जसवन्त सैनी,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वेदपाल देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
5. **डॉ. अशोक कुमार शर्मा,** एसो. प्रोफेसर, विधि विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. **डॉ. राजेश हुड्डा,** सहायक प्रो०, विधि विभाग, बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत
7. **डॉ० सत्यपाल सिंह,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
8. **डॉ० सोनू,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
9. **डॉ० अर्चना वशिष्ठ,** (सहायक प्रोफेसर, के०आर० मंगलम विश्वविद्यालय, सोहना रोड, गुरुग्राम)
10. **डॉ० आनन्द सिंह देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, सी०आर० कॉलेज ऑफ लॉ रोहतक)
11. **अनसुईया यादव,** (सहायक प्रोफेसर, विधि विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

गणित विभाग:

1. **डॉ० संजीव कुमार सिंह** (रीडर गणित विभाग, ए.आर.ई.सी. कॉलेज, खुरजा)
2. **डॉ० विनोद कुमार,** रीडर एवं अध्यक्ष गणित विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
3. **डॉ० मीनाक्षी गौड,** रीडर एवं अध्यक्षा गणित विभाग, नानकचन्द ऐंग्लो, संस्कृत कॉलेज, मेरठ
4. **डॉ० विरेश शर्मा,** लेक्चरर गणित विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ
5. **डॉ0 रश्मी मिश्रा,** एसोसिएट प्रोफेसर, जी.एल. बजाज इन्सिटियूट ऑफ टैक्नोलॉजी एवं मैनेजमैंट, ग्रेटर नोएडा

कम्प्यूटर विभाग:

1. **डॉ० रेखा चौधरी,** एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विभाग, राजकीय इंजीनियरियंग कॉलेज, भरतपुर, राजस्थान
2. **प्रो० एस.एस. भाटिया** (अध्यक्ष, स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन, थापर विवि, पटियाला)
3. **सर्वजीत सिंह भाटिया** (प्रवक्ता, कम्प्यूटर साईंस, खालसा कॉलेज, पटियाला)
4. **डॉ० बालकिशन सिंहल,** सहायक प्रोफेसर, कम्पयूटर विभाग, म०द०विश्वविद्यालय, रोहतक

संस्कृत विभाग:

1. **डॉ० रामकरण भारद्वाज** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)
2. **डॉ० सुनीता सैनी,** प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ० साधना सहाय** पूर्व प्राचार्या, नेशनल इस्माईल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ
4. **डॉ० सुमन,** (सहायक प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी।)

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग:

1. **डॉ० आर०एस० सिवाच,** प्रो० एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, म०द०वि०, रोहतक

दृश्यकला विभाग:

1. **डॉ० सुषमा सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक

पंजाबी विभाग:

1. **डॉ० सिमरजीत कौर,** सहायक प्रो० (पंजाबी), ईश्वरजोत डिग्री कालेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र)

संगीत विभाग:

1. **डॉ० संध्या रानी,** अध्यक्षा, संगीत विभाग, यू.आर.एल.ए., राजकीय पीजी कॉलेज, बरेली प्रोफेसर एवं अध्यक्षतथा डीन
2. **डॉ० हुकमचन्द,** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन संगीत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
3. **डॉ. अनीता शर्मा,** (संगीत–गायन प्राध्यापिका, जयराम महिला महाविद्यालय लोहारमाजरा (कुरुक्षेत्र)
4. **डॉ. वन्दना जोशी,** (सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा)

पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग:

1. **डॉ० सरोजनी नंदल,** प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उर्दू विभाग:

1. **डॉ० मो. नूरूल हक,** (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, उर्दू, बरेली कॉलेज, बरेली)

नोट : 1. प्रकाशित आलेखों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।
3. शोध–पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद केवल गाजियाबाद/फरीदाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।

Created by Universal Document Converter

An update on UGC - List Journals

The UGC List of Journals is a dynamic list which is revised periodically. Initially the list contained only journals included in Scopus, Web of Science and Indian Citation Index. The list was expanded to include recommendations from the academic community. The UGC portal wasa opended twice in 2017 to universities to upload their recommendations based on filtering criteria available at https://www.ugc.ac.in/journallist/methodology.pdf. The UGC approved list of Journals is considered for recruitment, promotion and career advancement not only in universities and colloges but also other institutions of higher education in India. As such, it is the responsibillity of UGC to curate its list of approved journals and to ensure the it contains only high-quality journals.

To this end, the Standing Committee on Notification on Journals removed many poor quality/ predatory/questionable journals from the list between 25th May 2017 and 19th Septemeber 2017. This is an ongoing process and since then the Committee has screened all the journals recommended by universities and also those listed in the ICI, which were re-evaluated and rescored on filtering criteria defined by the Standing Committee. Based on careful and analysis, 4,305 journals were removed from the current UGC-Approved list of Journals on 2nd May, 2018 because of poor quality/incorrect or insufficient information/ false claims.

The Standing Committee reiterates that removal/non-inciusion of a journal does not necessarily indicate that it is of poor quality, but it may also be due to non-availability of information such as details of editorial board, indexing information, year of its commencement, frequency and regularity of its publication schedule, etc. It may be noted that a dedicated web site for journals is once of the primary criteria for inclusion of journals. The websites should provide full postal addresses, e-mail addresses of chief editor and editors, and at least some of these addresses ought to be verifiable official addresses. Some of the established journals recommended by universities that did not have didicated websites, or websites that have not been updated, might have bee dropped from the approved list as of now. However, they may be considered for re-inclusion once they fulfil these basic criteria and are re-recommended by universities.

The UGC's Standing Committee on Notification on Journals has also decided that the recommendation portal will be opened once every year for universites to recommend journals. However, from this year onwards, every recommendation submitted by the universities will be reviewed under the supervision of Standing Committee on Notification of Journals to ascertain that only good-quality journals, with correct publication details, are included in the UGC approved list.

The UGC would also like to clarity that 4,305 journals which have been removed on 2nd May, 2018 were UGC-approved journals till that date and, as such, articles published/accepted in them prior to 2nd May 2018 by applicants for recruitment/promotion may be considered and given points accordingly by universities.

The academic community will appreciate that in its endeavour to curate its list of approved journals, UGC will enrich it with high-quality, peer-reviewed journals. Such a dynamic list is to the benefit of all.

Created by Universal Document

LIFE MEMBERS OF INDIAN JOURNAL OF SOCIAL CONCERNS

1. **Dr. Praveen Kumar Verma**
   Associate Professor, Hindi Department, GGD Sanatan Dharam Post Graduate College, Palwal.
2. **Smt. Veena Pandey (Shukla)**
   Hindi Teacher, Jawahar Navodya Vidyalya, Dhoom Dadri, Distt. Gautambudhnagar - 203207 (U.P.)
3. **Dr. Kiran Sharma**
   Asso.Professor, English Department, Govt. P.G. College (Women), Rohtak (Haryana)
4. **Dr. Narayan Singh Negi**
   H.No. 15, Umracoat, langasu-246446, Distt. Chamoli, Uttrakhand.
5. **Dr. Sarika Choudhary**
   Head Department of Economics, Dyal Singh College, Karnal (Haryana)
6. **Dr. Suman**
   H.No. 1001, Radha Swami Colony, Rohtak Road, Bhiwani (Haryana)
7. **Dr. Reshma Singh**
   Assistant Professor, English Department, J.V. Jain College, Saharanpur (U.P.)
8. **Dr. Savita Budhwar**
   Assistant Professor, K.V.M. Narsing College, Rohtak.
   H.No. 196/29, Gali No. 9, Ram Gopal Colony, Rohtak.
   Mob. 9996363764
9. **Principal**
   Sat Jinda Kalyana College, Kalanaur (Rohtak, Haryana) 124113
10. **Dr. Renu Rana**
    Assistant Professor Department of (Political Science) Pt. Nekiram Sharma Govt. College Rohtak-124001
    H.No. 1355, Sect-2, Rohtak
11. **Dr. Mamta Devi**
    Assistant Professor Department of Polt. Science Hindu Girls College, Sonepat (Haryana)
    H. No. 2066, Sect. 2 (P), Rohtak 124001
12. **Dr. Subhash Chand Saini** (Hindi Department, Dyal Singh College, Karnal, Haryana
13. **Dr. Sarita Dahiya** (Department of Education, Maharshi Dayanand University, Rohtak 8222811312
14. **Dr. Vimla Devi,** Associat Professor (History), Swami Vivekanand Govt. (PG) College, Lohaghat, Champawat (Uttrakhand)
15. **Princepal,** Associat Professor (Hindi), Aggarwal College, Ballabhgarh (Haryana)
16. **Dr. Vinit Bala,** Assistant Professor, Vaish College, Rohtak

Created by Universal Document Converter

सम्पादकीय

"इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स' का 37वा अंक समर्पित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। आज मैं आपका ध्यान नई–पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष जो अतीत काल से अब तक चला आ रहा है। उस विषय पर यदि हम विचार करें तो नई–पुरानी पीढ़ी में विचारो का मतभेद और नई पीढ़ी के नये परिवर्तनों को शंकालु दृष्टि से देखना, उनके साथ विचारों में तालमेल न बैठ पाना और नई पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार एवं अवहेलना और बगैर सोचे–समझे पुरानी पीढ़ी की प्रत्येक मान्यता का उपहास करना। ये सभी बाते नई–पुरानी पीढ़ी के संघर्ष को जन्म देती है। प्रत्येक माता–पिता अपने अधूरें सपनों को अपने बच्चों के द्वारा पूरा होता हुआ देखना चाहता है। परन्तु नई पीढ़ी के बच्चे माता–पिता को बिना किसी अंकुश के अपना जीवन अपने ढ़ंग से जीना चाहते हैं। दोनों ही पक्ष अपनी–अपनी बात अपनी–अपनी भावनाओं को ठीक मानकर अड़े रहकर अपनी विचारधाराओं को ठीक मानते हैं। दोनों पीढ़ियो में से कोई भी झुकने के लिए तैयार नहीं होता। इसके परिणामस्वरूप संबंधों में तनाव पैदा हो जाता है। पुरानी पीढ़ी यदि अपनी सोच को कुछ उदार बनाये और नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के अर्जित ज्ञान और अनुभवों से लाभ उठाये, उन पर विचार करें तो दोनों पीढ़ियों का जीना आसान बन सकता है और पारिवारिक कठिनाइयों का मुकाबला करने की क्षमता पैदा की जा सकती है, किन्तु नई पीढ़ी जिसमें बेहद जोश–खरोश और उत्साह भरा होता है, उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है क्योंकि सोचने के लिए उसे फुर्सत नहीं है। अपरिपक्वता और ठहराव के अभाव में नई पीढ़ी के लोग कई बार गलत कदम उठा लेते हैं, जिसके कारण बाद में उन्हें पछताना पड़ता है, और उनका भविष्य खतरे में पड़ जाता है।

यह तो उचित है कि बच्चों पर अपनी मर्जी थोपना ठीक नहीं परन्तु यहां पर यह भी उचित है कि उन पर आवश्यक अंकुश लगाना भी उचित है, जिससे बड़े होकर वे स्वेच्छाचारी और उद्दंड न बन सके। बच्चों को प्रारम्भ से ही इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि घर की समस्याओं में उनकी भी भागीदारी है। क्योंकि तभी वे माता–पिता को सहयोग दे सकेंगे और उनमें अच्छी–बुरी परिस्थितियों का दृढ़ता से मुकाबला करने की क्षमता पैदा होगी और माता–पिता का सहयोग दे सकेंगे।

आधुनिक युग में दिन–प्रतिदिन मंहगाई द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ने के कारण प्रत्येक व्यक्ति नौकर रखने की क्षमता नहीं रखता, ऐसी स्थिति में यदि बच्चों में आत्मनिर्भता नहीं आ पायेगा तो घर का काम कैसे चलेगा। बच्चे आलसी बन जायेंगे, प्रत्येक छोटे–बड़े काम के लिए दूसरों पर निर्भर हो जायेंगे। जिस वातारण में बच्चों का लालन–पोषण किया जायेगा उस वातावरण का प्रभाव हमेशा बच्चों पर रहता है। कई माता–पिता बच्चों की हर अच्छी–बुरी बात मानते रहते हैं। इसका परिणाम भविष्य में चलकर बच्चों के लिए ठीक नहीं होता यह बच्चों के लिए ठीक नहीं होगा जिस के कारण बच्चों को मनमानी करने की आदत पड़ जाती हैं। इस प्रकार से बच्चों भविष्य भी उज्ज्वल नहीं बन पाता। इसलिए बचपन से ही बच्चों अच्छे संस्कार डालने चाहिए उसी के अनुरूप उनको व्यक्तित्व विकास होता है।

आधुनिक युग में नगरों एवं महानगरों में माता–पिता के साथ मित्रता का व्यवहार बनाये रखते हैं इसमें कोई बुराई नहीं होती परन्तु कुछ मर्यादाओं का पालन माता–पिता व बच्चों बीच रहना चाहिए जो उनके हित में है, बच्चों के चरित्र निर्माण लिए आज्ञापालन और अनुशासन आवश्यक हैं। नारी स्वतन्त्रता साथ आधुनिक युग में परिवार में काफी बदलाव आया है। अतीतक में स्त्रियाँ पुरुषों से दबी रहती थी क्योंकि वे अशिक्षित होती थी कोई काम नहीं करती थी। आज नारी शिक्षित है और पुरुषों की नौकरी करके धन कमाती है इसलिए आज वे पुरुषों से दबी हुई रहना चाहती, बल्कि पुरुषों के हावी रहती हैं।

पीढ़ियों का अन्तर प्रत्येक युग में रहा है, परन्तु समझद इसी में है कि नई व पुरानी पीढ़ी अपने–अपने दृष्टिकोण को सही से एक–दूसरे के सम्मुख प्रस्तुत करें तथा एक–दूसरे की बातें धैर्यपू सुने व समझें। इस प्रकार से दोनों पीढ़ियों के बीच की दूरी को सम किया जा सकता है।

आजकल वृद्धों की स्थिति बहुत खराब होती जा रही पिता नौकरी पर होता है और बेटा भी अन्य शहर में नौकरी करने कारण उसी शहर में मकान बना लेता है। जिसके फलस्वरूप माता–पि से दूर रहने के कारण बेटा–बहू स्वेच्छाधारी बन जाते हैं। वृद्धाव में जब पिता सेवानिवृत हो जाता है तो माता–पिता सोचते है कि त तमाम जीवन बच्चों के बिना रहे हैं अब वृद्धावस्था में बच्चों के प जाकर आराम से रहेंगे, परन्तु जब माता–पिता बेटा–बहू के प आकर रहने लगते है तो बेटा तो माता–पिता की सेवा करके अपने भाग्यशाली समझता है परन्तु बहू सास–ससुर को स्वीकार नहीं कर अपनी सास से यहां तक कह देती है कि ये मेरा घर है यहाँ से नि जाओ। इसके अतिरिक्त पोता–पोती भी दादा–दादी को स्वीकार करते वे यहां तक कह देते हैं कि आपके आने से पहले हम यहां ठीक प्रकार से रह रहे थे आपके आने के उपरान्त सब कुछ गड़ हो गया और अब हम परेशान हैं। इन परिस्थितियों में वृद्धावस्था माता–पिता जहर के–सा घूंट भरकर रह जाते है क्योंकि उनके एक ही बेटा है इन परिस्थितियों में उनके पास और कोई विकल्प है। आज का वृद्ध घुट–घुट कर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है सभी पाठकों को इस समस्या का विकल्प ढूढ़ना चाहिए।

डॉ0 राजनारायण शुक्ला,
सम्पादक

डॉ0 हरिशरण
प्रधान सम्पा

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	Many Diversities Of Relation Between Woman And Man Coming Under The Head Of Love In D.h. Lawrence's Novel.	Sumita Bhaker	12-13
2.	Msme- Beginning Of A New Era	Dr. Santosh Kumar Sharma	14-18
3.	Nissim Ezekiel As An Indian English Poet Includes Both Romantic And Modern Elements To His Poetry	Sumita Bhaker	19-21
4.	A Study On The Teacher's Perception About Teaching Learning Process During Covid-19 Pandemic Lockdown	Dr. Monika, Mrs. Prerna Sharma Raina, Sikha Kumari	22-29
5.	Moral And Religious Vallies With Special Reference In The Novels Of Khushwant Singh"	Raj Kumar Singh	30-34
6.	Elder Abuse /global Situation And Prevention Strategies	Dr. Renu Chaudhary	35-36
7.	Feministic Interpretation Of The World Of Women In Deepa Mehta's 'fire' And 'water'	Anita Dalal	37-39
8.	Love Marriage And Sex In The Novel Of Khushwant Singh	Raj Kumar Singh	40-43
9.	Chandra Gupta Ii - The Expeditious Inheritor Of Samudra Gupta	Rinesh, Urmila Sharma	44-46
10.	How To Incorporate Your Spirituality At Work	Ms. Gargi Sharma	47-50
11.	Women's Silence Hides Violence	Ritika Sehrawat	51-52
12.	Urban Development And Social Environment During The Lockdown Due To Covid-19 In India : A Case Study Of Rohtak City 2020	Sunita Rani, Dr .Vinita Bala	53-54
13.	A Critical Analysis Of Reform In Indian Administrative System	Anuj Kumar	55-60
14.	वेदान्त दर्शन में मोक्ष का स्वरूप	गीता	61-62
15.	हिंदी साहित्य में सांप्रदायिकता एवं प्रभाव	डॉ० पूजा	63-64
16.	हिन्दी नवजागरण के निकष पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	अनूपम आनन्द	65-68
17.	मंजूर एहतेशाम के उपन्यास 'बशारत मंजिल' में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	सुमन देवी	69-72
18.	DNA BILL स्वतन्त्रता की राह में कितना बाधक	रीना	73-74
19.	वाल्मीकि रामायण में सीता जन्म और विवाह वर्णन	डॉ० कौशल्या देवी	75-80
20.	"माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना"	डॉ. संजीत	81-82
21.	वाल्मीकि रामायण में सीता की चारित्रिक विशेषताएं	डॉ० कौशल्या देवी	83-90
22.	"कोरोना काल और भारतीय संस्कृति	प्रमिला देवी	91-93
23.	अयोध्या सिंह उपाध्याय के प्रबंधो काव्यों में प्रिय प्रवास एवं वैदेही वनवास में मानव मुल्यों	डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा	94-95
24.	महाभारतकालीन समाज में नारी के कर्त्तव्य एवं अधिकार	सीमा	96-97
25.	गुरु जम्भेश्वर जी के 29 धर्म नियम तथा वर्तमान युग में उनकी प्रासंगिकता	गीता	98-98
26.	शंकराचार्य के अद्वैतवाद के अनुसार निर्गुण ब्रह्म का स्वरूप	सीमा	99-100
27.	कठोपनिषद् तथा ऐतरेय उपनिषद में ब्रह्म का स्वरूप	गीता	101-102
28.	श्रीमद्भगवदगीता में निष्काम कर्मयोग	सीमा	103-104
29.	कवि नार्गाजुन का संवेदना–संसार	डॉ0 के.डी.शर्मा	105-107
30.	ईशावास्योपनिषद् तथा केनोपनिषद् में ब्रह्म का स्वरूप	सीमा	108-108
31.	मधुकोट के कथा साहित्य में निरूपित समाज विशयक जीवन मूल्य	बबली	109-110
32.	कथाकार रमेश पोखरियाल 'निशंक' के साहित्य में हिमवन्त प्रदेश का लोकसमाज (उत्तराखण्ड के विशेष परिपेक्ष्य में)	कपिल देव पँवार	111-113
33.	संत कबीरदास जी की सामाजिक एवं सांस्कृति चेतना	प्रियंका	114-116
34.	20वीं सदी के हिन्दी खण्डकाव्यों में चित्रित पर्यावरण	डॉ0 मोनिका	117-118

Created by Universal Document Converter

10

HOW TO INCORPORATE YOUR SPIRITUALITY AT WORK

Ms. Gargi Sharma

Abstract

Spirituality in India is taken into account to be a personal matter and sometimes it's interpreted on religious backgrounds. Actually spirituality is something that provides aiming to one's life. Incorporating spirituality within the workplace can engage employees not only physiologically but psychologically also . A spiritual working environment provides internal as well as external motivation and satisfaction. If we are not satisfied internally, we cannot give our best to our employers. Spirituality in itself is a power that pushes all to work in team in any kind of situation. Spirituality at work is reflected by the organization's culture that's supported by the core values like trust, honesty, appreciation, innovation, care, respect and loyalty etc. From various studies it is reflected that the spirituality plays a very significant role in improving work environment, employees' performance and productivity. Spirituality helps in reducing employees 'absenteeism rate and labour turnover rate. Spirituality helps in making healthy relations between superiors and subordinates. Organizations following this concept at workplace will always be able to find solutions for every kind of problems. An organization having employees with spiritual thinking is mostly found superior than an organization having atheistic employees. The aim of this research paper is to explore this scenario of workplace spirituality in Indian context, further it attempts to spot the ways to incorporate our spirituality at work.

(Keywords- Spirituality, Workplace, Employees, Organization)

INTRODUCTION:- Meaning of Spirituality- Spirituality is the state of ultimate well-being, which is qualitatively different from what is ordinarily experienced. It is regarded as a state of inner peace and tranquility. Spirit is hidden in all beings.

We have an in-built immune system that we maintain with our healthy lifestyles. Just as we develop immunity in the body, we need to develop immunity of the spirit to protect the purity of our heart, mind and soul and stay free from stresses.

What is workplace spirituality?

According to Petchsawang and Duchon (2009), workplace spirituality or spirituality at work is defined as "having compassion towards others, experiencing a mindful inner consciousness within the pursuit of meaningful work which enables transcendence."

In simple terms, it's about finding meaning, value, and motivation in one's work beyond paychecks and performance. It is about people finding a way of oneness and togethemess in a corporation as an entire.

Spirituality within the workplace began within the early 1920s and emerged as a grassroots movement with individuals seeking to measure their faith and/or spiritual principles at work. Now, more and more organizations realize the importance of workplace spirituality. Also, people now acknowledge the very fact that employment are often meaningful to their lives also .

Why it is important at workplace?

Spirituality at work is becoming an important aspect of organizations round the world and for an honest reason, i.e., its numerous benefits –

- Improved overall well-being of employees.
- Increased employee productivity.
- Reduced absenteeism.
- Increased motivation and commitment.
- Increased job satisfaction.
- Improved quality of life.
- Increased employee morale.
- Reduced workplace stress.
- Reduced employee burnout.
- Reduced turnover rate rates.
- Improved work performance.

OBJECTIVES OF THIS STUDY

- This paper presents how to incorporate our spirituality at work.
- This paper also presentsthat how spirituality at work place is related to the employees' performance.

RESEARCH METHODOLOGY

This research paper is the outcome of secondary data which have been gathered from various online research papers, journals, e-books and books. This paper is completely qualitative in nature.

LIMITATION

This research paper is based on secondary information. No primary data have been collected to present this research paper. There is no use of quantitative techniques in presenting data in this research paper. We can use some quantitative techniques in presenting the various positive effects of workplace spirituality.

CHARACTERISTICSOF SPIRITUAL ORGANISATION

Strong sense of purpose: Organizational members know why the organization exists and what it values.

Focus on individual development: Employers are valuable and wish to be nurtured to assist them grow. These characteristics also include a way of job security.

Trust and openness: Organizational member relationships are characterized by mutual trust, honesty

created by Universal Document Converter

and openness.

Employee empowerment: Employees are allowed to a make work related decisions that affect them, highlighting a robust sense of delegation of authority.

Toleration of employee expression: The organization culture encourages employees to be themselves and to precise their moods and feelings without guilt or fear of reprimand.

HOW TO INCORPORATEOUR SPIRITUALITY AT WORK?

Most people spend the bulk of their waking hours at work. If you're a spiritual person, then you always try to apply your principles related to spirituality to your workplace too. Unfortunately, it often isn't as simple as that, when you are surrounded by the people who don't respect your beliefs. You don't want to take risk of damaging your reputation within the office. There are, however, many ways in which you'll remain professional while still staying faithful with your values and spirituality at work. How to implement workplace spirituality? Your spirituality often lies at the core of everything that you simply do. It involves a commitment to your value system, and it's critical to nurture that value system both in your private life and within the workplace. As people become busier and our lives become even more work-centric, it's more important than ever to hold our spirituality into the workplace. There are some suggestions for incorporating your spirituality within the workplace:

1. Connect your work to your value system- Don't just take employment simply because it's high paying. Some jobs might not align together with your value system, and you'll find it difficult to develop any kind of workplace spirituality. Instead, choose a career that focuses on your core beliefs. If you're already on a particular career path, you'll always check out working for companies that strive to form the planet a far better place. Concentrate to what the corporate stands for. Who are they helping, and the way are they treating people both inside and out of doors the company? Do research on any company that you simply are interviewing with. Ask questions during the interview process to ascertain if the organization aligns together with your spirituality. Know exactly what you're stepping into before you accept the work, check out their websites and annual reports, what's their mission statement?, their vision for the corporate , and what are their core values? Are the company's actions keeping with the values that they preach?

2.Check out things positively- Learn to abandoning of negativity at work. Whether it's a criticism from a colleague, people complaining about their jobs to you, or handling a disgruntled client, attempt to search for the positives. If you're ready to take frustrating situations and convey light to them, you'll be better at your job, and you'll treat those around you better. attempt to use positive words once you mention things . Analyze th whole situation positively and then only react. Try to rea in a positive manner.

3. Treat others well- It's an easy thing that's ofte overlooked within the workplace. Treat others how you wish to be treated. Say please and many thanks . Te people you appreciate the work that they are doing . Pa others compliments. Bringing this type of kindness to th workplace are often contagious. Not only will it cause yo to more positive, but it allows you to spread joy to others

4. Take a while for yourself -Have moments of silen throughout the day. This might mean putting som headphones certain a couple of moments or taking walk outside to clear your head. Work on incorporatin things like meditation, prayer, or mantras into your wo day, counting on the type of spirituality you practic These are things which should be done at your de without anyone even noticing. They will be quic moments throughout the day that bring you back to yo spirituality and permit you to focus better at work.

5. Get to understand your co-workers- Who are th folks that you're employed with? Would going to kno one another promote a more cohesive environmen Sometimes people need someone to speak to, and if yo sense that some coworker wants to share anything wi you, offer your ear to him/her. The more you study yo you, offer your ear to him/her. The more you study yo coworkers, the more you'll be able to sympathize wi them.

6. Speak to your boss about ideas you've got t spread workplace spirituality- Consider how yo company can do more for the community you're in. Ho can they contribute to the betterment of the planet some small way? Think about things that the corpora can do to enhance the workplace spirituality for th workers . Come up with a couple of ideas that align wi the company's values and convey them to yo supervisor. Be hooked in to it. Have a transpare understanding of what is going to be required by th company to provide better working place to th employees.

7. Be mindful- Be aware of your actions and the wa they affect those around you. Believe what you're sayin and therefore the words you're using before you spea them. Lookout together with your words and action Notice how people react to them. Notice how othe within the office treat each other , and consider way you'll improve this. Being mindful of yourself is on among the foremost valuable belongings you can do bring your spirituality to figure with you every day . you're fully conscious of your actions and words, you make decisions that align together with your values.

8. Put people first- When you foster a piec environment where you set your colleagues and sta first, you create people feel valued. When people fe valued at work, they work even harder Nurtu relationships with everyone within the business. This

includes employees, customers
, and suppliers. When people feel that they're working with someone who cares for them, they need to remain loyal. This kind of culture makes the organization's employees more productive and ultimately it will lead to business profit.

9. Find others who feel an equivalent- Find others in your workplace who share an equivalent beliefs and values as you are doing . It's always nice to possess someone at work that you simply can share ideas with. If you don't feel comfortable speaking about your spirituality at work, discuss it together with your friends that you simply have outside of the office. Ask them how they implement spirituality at work without making others around them uncomfortable.

10. Slow down- Sometimes life can move so fast that we stop listening to our spirituality and our values. We've all been in situations where we make snap decisions, say things we don't mean, or act in ways we're not pleased with . Hamper once you can, lookout in every action that you simply do, every decision that you simply make, and each word that you simply speak. Remember that all of them have repercussions. Combat one thing at a time rather than trying to multitask. Even when it seems like it's impossible to hamper , simply take a flash and step back from things . Take a couple of deep breaths. Slowing down is simpler than you think that .

11. Size up regularly- At the top of every week, monthly , or maybe just at the top of every day, think how you'll add more spirituality to your lifestyle . Observe your actions over that period of your time and reflect on whether or not they were the proper ones. Learn from those reflections and take that forward to undertake to enhance . No one is ideal and that we are all learning the way to practice our worth system in several real-life situations. It's very easy to believe how you'll react to certain situations, but the truth is typically very different. Take stock regularly of how you're applying your values to your practice of spirituality at work. No matter what your beliefs or values are, it's important to hold them with you both in your personal life and when you're at work. Be faithful to yourself, and if you are feeling that you simply aren't ready to carry your values with you at work, then it's going to be time to seek out somewhere that you simply can.

WORKPLACE SPIRITUALITY AND EMPLOYEES' PERFORMANCE

(a) Spirituality enhances employee well- being and quality of life;

(b) Spirituality provides employees a way of purpose and meaning at work;

© Spirituality provides employees a way of interconnectedness and community.

When our inner soul feels satisfied, it charges our body with a power to work more efficiently and in an appropriate manner. Employees having good moral values also affect the behaviour of other employees. This kind of environment helps the employees in understanding the problems of others also. In this kind of workplace which is full of spiritual and positive energy gives a true meaning of task fulfilment to the employees. Now the employee's objective is not only to achieve the prescribed target but also to satisfy her/his soul as well as the soul of his/her employer.

- Ultimately spirituality gives job satisfaction to the employees. In spiritual work environment employees perform without selfishness. All work in a team without any self- profit motive.
- Employees working in spiritual work environment are more honest than the employees in organizations with non- spiritual working environment. There is no place of any kind of guilt in employees working in spiritual work environment.
- Employees can share their problems frankly in this kind of environment and feel more satisfied internally.
- In this kind of work environment employees are always ready to take any kind of challenge and to show their talent. They are self-motivated.
- When there is workplace spirituality, employees always respect the orders of their employers and feel obliged to fulfil those orders.
- A spiritual work environment acts as tool of motivation for the employees. This kind of working environment can change the work attitude of employees. In this kind of environment employees are always active to do work with positive energy.
- Spirituality at workplace can even change the mind set of dishonest employees. Because in this kind of work environment before committing any fraud, the inner soul of that employee start questioning him.

CONCLUSION

Workplace spirituality is meant to interconnect past experiences and develop trust among employees during a way that might lead the organization into a far better and productive environment. ... As a result, many problems like stress, absenteeism, and frustrating environment are often minimized. Spirituality is that a part of yourself that helps you discover meaning, connectedness and purpose in your life.. ... Spirituality seems to assist people deal with illness, suffering and death. Spirituality also influences end-of-life decisions. Engaging in practices that support spirit within the workplace can uplift the spirits of everyone involved. Since spirit within the workplace encourages each individual to bring their whole self to both work and residential , it increases the satisfaction level in both areas. Being aligned with a corporation that fosters the

Created by Universal Document Converter

essence of who you're enables you to feel and display an incredible sense of loyalty. once you feel a greater sense of connection to your work, you're more motivated to supply good work. Which successively increases the general productivity of a corporation . These organizations believe that spirituality could ultimately be the best competitive advantage.

REFERENCES

https://blog.vantagecircle.com/workplace-spirituality/

https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/23311975.2016.1189808

https://www.researchgate.net/publication/317066061_Spirituality_at_Workplace

https://managementhelp.org/employeewellness/spirituality-in-workplace.htm

https://www.peoplematters.in/article/life-at-work/spirituality-and-workplace-14997

https://www.emerald.com/insight/content/doi/10.1108/09534810310484172/full/html

https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/23311975.2016.1189808

https://www.spiritualresearchfoundation.org/spiritual-practice/spiritual-paths/what-is-spirituality/

https://www.semanticscholar.org/paper/TITLE-IMPACT-OF-SPIRITUALITY-ON-JOB PERFORMANCEMukherjee/9243105fa9729fa1845c23a219fa63bb6e3

https://www.researchgate.net/publication/228444069_The_impact_of_spirituality_on_work_performance

https://journal-archieves33.webs.com/248-254.pdf

https://pdf.sciencedirectassets.com/

www.researchfoundation.com

https://www.wework.com/ideas/worklife/ways-to-incorporate-your-spirituality-at-work

www.spiritualresearchfoundation.org

Ms. Gargi Sharma, Assistant Professor,
D.A.V Centenary College, Faridabad.
(email- gargi.sharma84@gmail.com)
Ms. Shweta Sachdeva, Assistant Professor,
D.A.V Centenary College, Faridabad.
(email- shwetanamrata065@gmail.com)
Ms. Priya Sethi, Assistant Professor,
D.A.V Centenary College, Faridabad.
(email- psethi307@gmail.com)

Created by Universal Document